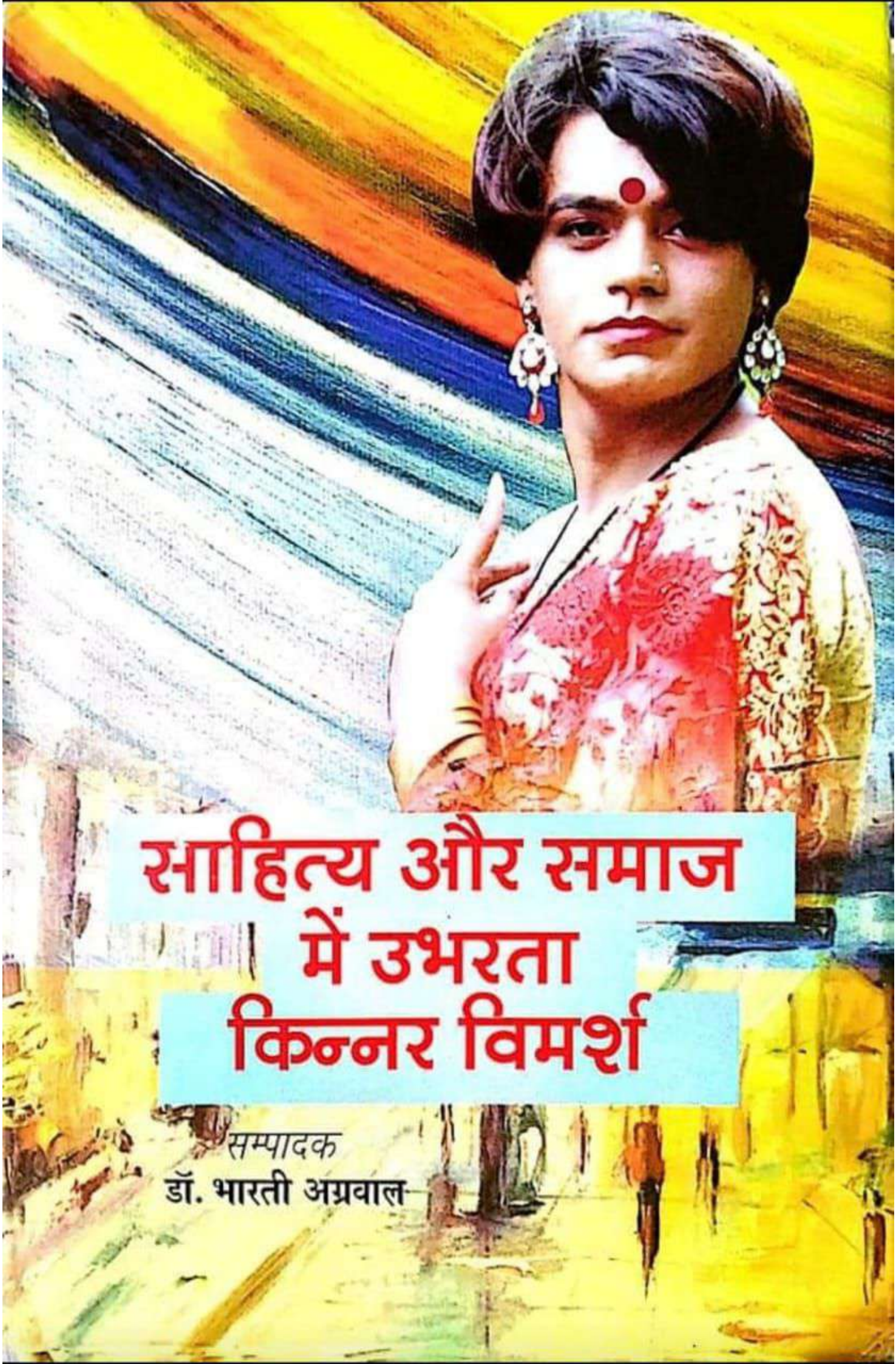

साहित्य और समाज में उभरता किन्नर विमर्श

सम्पादक

डॉ. भारती अग्रवाल

प्रत्येक आलेख में लेखक के अपने विचार है। जिनका सम्पादक, प्रकाशक या किसी और किसी का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

ISBN : 978-81-940315-7-4

© सम्पादक

प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

मोबाइल : +9315194807

ई-मेल: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2019

अक्षर सयोंजक

दीपिका शर्मा दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फ़ोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

अनुक्रमणिका

सम्पादक की कलम से — v

भूमिका — ix

1. पुरूष तन में फंसा मेरा मानवी नारी मन — 1
   डॉ. मालती
2. किन्नर जीवन का दुःख दग्ध संसार — 9
   डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय
3. ट्रांसजेंडर समुदायः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन — 13
   घनश्याम कुशवाह
4. किन्नर समुदाय के अंतरंग जीवन का सजग प्रहरी : 'यमदीप' — 20
   प्रो. शर्मिला सक्सेना
5. हमारी भी सुनो... — 27
   डॉ. महेश दवंगे
6. तीसरी सत्ता का सच और 'यमदीप' — 36
   डॉ. रूचिरा ढींगरा
7. किन्नर विमर्श का गतिरोध अपरिपक्व उपन्यासिक अभिव्यक्ति का 'अस्तित्व' — 51
   प्रोफेसर मेराज अहमद .
8. किन्नरों का अस्मिता-संघर्ष और हिन्दी उपन्यास — 62
   डॉ० कुलभूषण मौर्य
9. थर्ड जेंडर मध्यकालीन इतिहास से वर्तमान तक — 74
   डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह
10. खुले आकाश में खुलती बंद खिड़की — 86
    डॉ. भारती अग्रवाल
11. किन्नर समुदाय : एक अंतर्यात्रा — 98
    डॉ संगीता मौर्य
12. थर्ड जेंडर जीवन का कोलाज बनाती कविताएं — 106
    श्रीमती नीलेश शर्मा